



पाठ-दो हियाङ् - तान्बा

नौका, प्रतियोगिता, खिलाड़ी, अग्रभाग, अगुआ, डाँड़, नियन्त्रण, खाई, शुक्ल, एकादशी, आँवला, उपलक्ष्य, निर्माल्य।

‘हियाङ् तान्बा’ मणिपुर का एक प्राचीन खेल है। इसका अर्थ है नौका-दौड़ प्रतियोगिता का खेल। इस खेल में दो लम्बी नौकाओं का प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक नौका में सत्रह-सत्रह खिलाड़ी होते हैं। नौका के अग्रभाग में प्रत्येक दल का अगुआ हाथ में डाँड़ लेकर खड़ा रहता है। उसे “तेङ्माइ लेप्पा” कहा जाता है। वह नौका चलाने में भाग नहीं लेता। नौका के पिछली भाग में एक खिलाड़ी बैठा रहता है। उसे “हिनाओ शाबा” कहा जाता है। दौड़ प्रतियोगिता के दौरान नौका का पूरा नियन्त्रण उसके हाथ में रहता है। नौका चलाने वाले खिलाड़ियों को “हिरोइ” कहा जाता है। वे खड़े-खड़े नौका को खेते हैं।



हियाङ् का खेल नदी जैसी एक बड़ी और लम्बी खाई में होता है, जिसे मणिपुरी भाषा में “थाङ्गपात” कहा जाता है। पुराने जमाने में इसे “पाना हियाङ्” के नाम से जाना जाता था। पहले शासन की सुविधा के लिए मणिपुर छह प्रशासनिक खण्डों में विभाजित था। एक-एक खण्ड को “पाना” कहा जाता था। पाना हियाङ् के अवसर पर दो-दो दल बनाए जाते थे। एक दल महाराज-पक्ष का और दूसरा महारानी-पक्ष का माना जाता था। महाराज-पक्ष के खिलाड़ियों को “निङ्थौनाइ” कहा जाता था और महारानी-पक्ष के खिलाड़ियों को “लैमनाइ”।

हियाङ् तान्नबा का वर्तमान रूप “हैगु-हिदोङ्बा” है। इसे एक धार्मिक पर्व माना जाता है। यह लाङ्बन महीने की शुक्ल एकादशी को मनाया जाता है। यह हर वर्ष सगोलबन्द में श्रीविजयगोविन्दजी के मन्दिर के पास स्थित थाङ्गपात में सम्पन्न होता है। “हैगु-हिदोङ्बा” का अर्थ है, नाव पर आँवला चढ़ाना। यहाँ के लोग इस पर्व के पहले आँवला खाना अशुभ मानते हैं। इसलिए वे इस पर्व के बाद ही आँवला खाते हैं। इस पर्व के उपलक्ष्य में 108 आँवलों की एक माला और हाथ के कुटे चावल के 108 दानों की एक माला श्रीविजयगोविन्दजी को अर्पित की जाती है। बाद में निर्माल्य के रूप में दोनों नावों के अग्रभाग में एक-एक माला पहना दी जाती है।

“हियाङ् तान्नबा” मणिपुर के पुराने जातीय पर्वों में से एक है। आज भी इसका बहुत महत्व है।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

प्रतियोगिता	=	प्रतिस्पर्धा, दौड़, मुकाबला।
नौका	=	नाव।
अग्रभाग	=	आगे का भाग।
अगुआ	=	मुखिया, नेता।
डाँड़	=	नाव खेने का डण्डा।
नियन्त्रण	=	वश में रखना।
लुप्त	=	अदृश्य होना, लोप हो जाना, छिप जाना।
निर्माल्य	=	किसी देवता को समर्पित किया हुआ पदार्थ।
2. उत्तर दीजिए :
 - (क) हियाङ् तान्नबा कैसा खेल है ?
 - (ख) हियाङ् तान्नबा में कितनी नौकाओं का प्रयोग किया जाता है ?
 - (ग) प्रत्येक नौका में कितने खिलाड़ी होते हैं ?
 - (घ) प्रत्येक दल के अगुआ को क्या कहते हैं ?
 - (ङ) हिनाओ शाबा कहाँ बैठता है ?

- (च) नौका खेने वाले खिलाड़ियों को क्या कहते हैं ?
 (छ) हियाड्-तान्नाबा का खेल कहाँ होता है ?
 (ज) “पाना” क्या है ?
 (झ) महाराज-पक्ष के खिलाड़ियों को क्या कहते हैं ?
 (ञ) महारानी-पक्ष के खिलाड़ियों को क्या कहते हैं ?
 (ट) हियाड्-तान्नाबा का वर्तमान रूप क्या है ?
 (ठ) हैगु-हिदोड्बा कब मनाया जाता है ?
 (ड) हैगु-हिदोड्बा कहाँ सम्पन्न होता है ?
 (ढ) हैगु-हिदोड्बा के उपलक्ष्य में श्रीविजयगोविन्दजी को क्या अर्पित किया जाता है ?
 (ण) हैगु अर्थात् आँवला की कुछ विशेषताएँ लिखिए।
 (त) आँवला के अलावा कुछ फलों के नाम बताइए, जो मणिपुर में पाए जाते हैं ?

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

प्रतियोगिता	-----
अग्रभाग	-----
अगुवा	-----
नियन्त्रण	-----
वर्तमान	-----
लुप्त	-----
विभाजित	-----
अशुभ	-----
निर्माल्य	-----
उपलक्ष्य	-----

4. तालिका को देखिए और वाक्य बनाइए :

हियाङ्	का	नौका-दौड़ की प्रतियोगिता का खेल खेल नदी जैसी एक बड़ी और लम्बी खाई में मणिपुर के पुराने जातीय पर्वों में से एक वर्तमान रूप हैगु हिदोङ्बा	है। होता है।
--------	----	---	-----------------

5. सही कथन के आगे (✓) का निशान और गलत कथन के आगे (X) का निशान लगाइए :

- (क) हियाङ् तान्बा का अर्थ है नौका-दौड़ प्रतियोगिता का खेल। ☐
- (ख) प्रत्येक नौका में सत्रह-सत्रह खिलाड़ी होते हैं। ☐
- (ग) पाना हियाङ् की प्रथा अब तक प्रचलित है। ☐
- (घ) हियाङ् तान्बा का वर्तमान रूप “हैगु हिदोङ्बा” है। ☐

6. निम्नांकित पर्याय-शब्दों को पढ़िए और याद रखिए :

- नौका = नाव, पोत, डोंगी।
हाथ = हस्त, कर, पाणी।
वर्ष = बरस, साल।
पर्व = त्योहार, उत्सव।
नदी = सरिता, तटिनी, तरंगिणी, प्रवाहिणी।
घर = गृह, सदन, भवन, निकेतन, निवास, आवास।
कपड़ा = वस्त्र, चीर, अम्बर।

साँप	= सर्प, नाग, भुजंग, विषधर, फणधर।
चिड़िया	= खग, पक्षी, विहग, पंछी, विहंगम।
हवा	= पवन, वायु, अनिल, समीर, मारुत।
अग्नि	= अनल, आग, पावक।
घोड़ा	= अश्व, हय, तुरंग, सैन्धव।
अहंकार	= घमण्ड, अभिमान, दर्प, गर्व।
आकाश	= नभ, गगन, अम्बर, व्योम, अनन्त, आसमान।
कमल	= पंकज, जलज, नलिन, पद्म, सरोज, राजीव।
जल	= पानी, तोय, नीर, सलिल, पथ, अम्बु।
दिन	= वासर, दिवस, वार, दिवा।
पर्वत	= अचल, गिरि, शैल, नग, पहाड़।
पृथ्वी	= धरा, भूमि, धरती, भू, वसुन्धरा।
बादल	= मेघ, घन, जलद, जलधर, पयोद, नीरद।
माता	= माँ, मातृ, जननी, अम्बा।
राजा	= नृप, महीप, नरेश, नरेन्द्र, नृपति।
पेड़	= वृक्ष, तरु, विटप, दरखत।
सूर्य	= सूरज, भानु, भास्कर, रवि, दिनकर, प्रभाकर।